अपहरण

सूरज पालीवाल

अपहरण

सूरज पालीवाल

सूरज पालीवाल

शिक्षा : बी.ए. (ऑनर्स), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल., पी-एच.डी.

प्रकाशित कृतियाँ : टीका प्रधान, जंगल (कहानी-संग्रह); फणीश्वरनाथ रेणु का कथा संसार, रचना का सामाजिक आधार, संवाद की तह में, आलोचना के प्रसंग, मैला आँचल : एक विमर्श, साहित्य और इतिहास-दृष्टि, महाभोज का महत्व, समकालीन हिन्दी उपन्यास, हिन्दी में भूमंडलीकरण का प्रभाव और प्रतिरोध, इक्कीसवीं शताब्दी का पहला दशक और हिन्दी कहानी (आलोचना); स्वाधीन भारत के हिन्दी उपन्यासों में जातीय उभार के सामाजिक-राजनीतिक कारण (वृहत शोध परियोजना)।

हिन्दी की जानी-मानी पत्रिकाओं में 90 से अधिक आलेख प्रकाशित।

सम्पादन : एक दशक तक चर्चित कथा पत्रिका 'वर्तमान साहित्य' के सम्पादक मण्डल में तथा अब 'इरावती' पत्रिका के प्रधान सम्पादक।

पुरस्कार : डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान, पंजाबी कला एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार, डॉ. अम्बेडकर फैलोशिप, प्रेमचन्द पुरस्कार।

विदेश यात्रा : 'उभरते हुए नये आर्थिक परिदृश्य में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ' विषय पर अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी, दिनांक 4-6 नवम्बर, 2010 पीकिंग यूनिवर्सिटी (चीन) में सहभागिता।

सम्प्रति : अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विवविद्यालय, गाँधी हिल्स, वर्धा-442005

मोबाइल : 09421101128

अपने दौर के समर्थ कथाकार सूरज पालीवाल के इस संग्रह की कहानियाँ इंसान के अच्छे और बुरे पक्षों को प्रकाशित करके अंतत: मानवीय मूल्यों की पक्षधर हो जाती हैं। कहानियों के संदर्भ में वरिष्ठ कथाकार संजीव का कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है- "सूरज पालीवाल की कहानियों की पृष्ठभूमि ब्रज और उसके आसपास की ग्रामीण और कस्बाई स्थितियाँ हैं, गरीबी है, भुखमरी है, गाँवों में पनपती गुंडई है, ग्रामप्रधानी के चुनाव हैं, जातिवादी जकड़न में जकड़ी शक्तियों के वर्चस्व की लड़ाई-टकराहटें, पैंतरे और समीकरण हैं...

...सूरज पालीवाल की कहानियाँ ग्राम सभा, चुनाव प्रशासन जैसे संस्थानों और नैतिक साहस जैसे मूल्यों के निरन्तर कमजोर पड़ते जाने और अन्तत: व्यर्थ होते जाने की दास्तान बयान करती हैं। आज तो शैल्पिक चमत्कारों और खिलंदड़ी भाषा से कथ्य की कमी को ढकने की नीम चालाकियों का दौर है, मगर कभी कथ्य अपने आप में ही इतना मजबूत, मार्मिक और बेधक हुआ करता था कि उसे किसी अतिरिक्त या सायास साज-सज्जा की जरूरत नहीं होती थीं।...

...सूरज पालीवाल की तीन दौरों की कहानियाँ इस संग्रह में शामिल हैं-पहली, गाँव की कहानियाँ, दूसरी शहर की होकर भी अजनबीपन की कहानियाँ, तीसरी, आरोपित, कृत्रिमता से मुक्त होने और अपनी जड़ों की ओर लौटने का अभिक्रम करती कहानियाँ। अन्तिम दौर तक आते-आते उत्तर आधुनिकतावाद, अस्तित्ववाद और दूसरे पश्चिमी कथा आन्दोलनों की प्रभावछायाएँ भी दिखने लगती हैं। ग्लोबलाइजेशन तब तक आया न था, मगर उसके शिकारी कदमों की आहट तो इन कहानियों में सुनी जा सकती है। संख्या के लिहाज से बहुत कम कहानियाँ हैं कुल जमा अट्ठाइस !"

ये कहानियाँ देर तक और दूर तक पाठक का साथ देंगी इसीलिए ये कहानी संग्रह विशेष रूप से संग्रहणीय है।

अपहरण

महाशय पन्नालाल का अपहरण मेरे लिए बहुत बुरी घटना थी। रात के समाचार खत्म ही हुए थे कि पूरा गाँव जैसे हिल उठा। चारों तरफ आवाजों का भयंकर और डरावना शोर। गाँव में आए गीदड़ भी इस अजीब से शोर को सुनकर भाग गए थे। कुछ देर गीदड़ों, भजन मंडली और बीझेला से आती मिश्रित आवाज ने मुझे डरा दिया था। हालाँकि रात में गाँव में कट्टा छूटना, एकाध बार आवाज आना और तरह-तरह की भयाक्रान्त फुसफुसाहटों का क्रम बिना किसी अवरोध के चलता रहता था। गाँव उसका अभ्यस्त भी हो गया था।

सहकारी विकास बैंक के चुनाव होने वाले थे। चुनाव गाँव में बाढ़ की तरह आते हैं और अकाल की तरह चले जाते हैं। गाँव का कोई ऐसा घर नहीं था जिसमें चुनावों की चर्चा न हो। बीझेला थोक से रघुनाथ चौधरी सहकारी विकास बैंक के सरपंच के लिए चुनाव लड़ रहे हैं और उनका मुख्य मुकाबला लाला परमानन्द से है। यद्यपि इस चुनाव में कई गाँवों के लोग खड़े हैं, लेकिन इलाके का सबसे बड़ा और सबसे उग्र गाँव बरौठ ही है जिसके बारे और गाँव कुछ बोल ही नहीं पाते हैं। जब भी चीनी आए, मिट्टी का तेल आए या कपड़ा आए बरौठ का मेला सहकारी बैंक पर ही लगता। चूची बच्चा से लेकर आंधेरे ढोकरा-ढोकरी भी पीछे नहीं रहते। कब लठामार हो जाए इसलिए पुलिस के सिपाही मुस्तैदी से सिगरेट के कश लेते हुए आराम फरमा रहे होते। मधुरा जिला में ही नहीं लखनऊ से लेकर दिल्ली तक में बरौठ बाजना का आदमी देखते ही दुकानदार अपना सामान समेटने लगते हैं। देखा नहीं दिल्ली से आती बस को-ऊपर नीचे भरी बस कब कहाँ रुक जाए और तू-तू मैं-मैं होने लगे कोई नहीं जानता। जो नहीं जानता वह आश्चर्यचकित होकर देखता है और जो जानता है वह उसका सक्रिय हिस्सेदार होता है।

सहकारी विकास बैंक की सरपंची दुधारी गाय है जिसे एक बार मिल जाए उसकी सात पीढ़ी तर जाती हैं। इसलिए एम.एल.ए. से लेकर बम्बई में बसे सेठों तक में सरपंची का नाम मुँह में पानी ले आता है। कुशलपाल एम.एल.ए. न जाने कितनी बार गाँव में आकर अपने प्रभाव का डंका पीट चुका है। एक बार तो पछइयाँ थोक में ऐसी धूल बरसाई कि उसका कुर्ता-पाजामा का रंग ही पहचानना मुश्किल हो गया था। आँखों का चश्मा कब गिर

गया पता ही नहीं चला। अब रघुनाथ का नाती उसे मजे से लगाकर घूमता है। गाँव के बच्चों के लिए सरपंची से ज्यादा कुशलपाल का चश्मा महत्त्वपूर्ण हो गया है इसलिए हर बच्चा उससे ईर्ष्या करता है और इस टोह में रहता है कि एक बार कुशलपाल और आ जाए तो चश्मा जरूर खोंस लें।

महाशय पन्नालाल भी इसी चुनावी दौरे पर ही परसों आए थे। इन दिनों गाँव में उनकी रुचि कुछ ज्यादा ही बढ़ गई है। गाँव के लिए यह विशेष आश्चर्य है कि इतने दिनों बाद उन्हें गाँव की याद कैसे आई। एक-डेढ़ साल ही बीता होगा जब रामलीला के दिनों में महाशय पन्नालाल दिल्ली से कार करके आए थे। रामलीला तब तक शुरू नहीं हुई थी। गाँव में कार का आना सातवें आश्चर्य से कम नहीं है। आस-पास के लोगों की भीड़ जुट गई थी। रामलीला की आरती के शंख को भी अनसुना करके भीड़ का जुटे रहना-बड़ी बात थी। ऐसी भीड़ या तो सेंतमेंत के प्रसाद के लिए होती है या पटवारी, सरपंच के क्य लेकिन महाशय पन्नालाल का आना शायद उससे कम नहीं था। वैसे भी कार का आना-कई साल पहले गाँव में डकैती पड़ी थी तब डकैत कार से ही आए थे। तब से लेकर विधानसभा तथा लोकसभा के चुनावों या कभी-कभी विवाह-शादियों में ही कार गाँव में घूमती हैं, लेकिन जब भी आवाज आती एक अजीब-सी मानसिकता में सारा गाँव डूब जाता। महाशय पन्नालाल के घर पर जुटी ठसाठस भीड़ का कारण मुख्यत: तो कार था। बच्चे अन्दर हल्की-सी रोशनी में जगमगाती कार को देख रहे थे और बड़े-बूढ़े महाशय जी को हाथ जोड़कर नमस्कार कर रहे थे। मुझे याद है रामलीला में लक्ष्मण शक्ति पर राम के रुदन से दुखी होकर उन्होंने पाँच सौ रुपये दिए थे। पाँच सौ रुपये-पूरी भीड़ का मुँह खुला रह गया था। पाँच सौ रुपया। उसके बाद खज्जी जोकर का गाना हुआ था। क्या गाना था किसी को ध्यान नहीं। जिस खज्जी को देखकर ही लोग खिल पड़ते वही खज्जी उनके लिए बेकार का हो गया था। उस दिन भरत-मिलाप में किसी को आनन्द नहीं आया था। बूढ़े जिल्लेदार को हर साल लोगों ने आँसू बहाते और ढकराते देखा है, लेकिन इस बार उन्हें राम के दु:ख ने छुआ तक नहीं। परन्तु महाशय पन्नालाल को ऐसा छुआ कि हर जगह ऐसी चर्चा रही कि रामलीला वाले चुप कराते-कराते थक गए। ले-देकर रामलीला रामलीला जल्दी ही समाप्त करनी पड़ी थी उस दिन।

एक-डेढ़ साल पहले की वह घटना मुझे हूबहू याद है। दूसरे दिन सुबह से ही हर जगह एक ही चर्चा थी